International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

वाल्मीकि रामायण में नारी–चेतना : एक समीक्षात्मक अध्ययन

उषा खत्री
शोधार्थी, शोध छात्रा, संस्कृत विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर रोहतक

सारांश

भारतीय साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परम्परा में नारी का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रहा है। वैदिक ऋषिकाओं से लेकर संस्कृत महाकाव्यों की नायिकाओं तक नारी के व्यक्तित्व में ज्ञान, संवेदना, त्याग, साहस, स्वाभिमान, नीति–बुद्धि और आत्मनिर्णय के विविध रूप अभिव्यक्त हुए हैं। आदिकवि वाल्मीकि द्वारा प्रणीत रामायण इस दृष्टि से विशेष महत्त्व रखती है, क्योंकि इसमें नारी केवल पारिवारिक संबंधों की संवाहिका नहीं, बल्कि कथा, धर्म और नैतिक विमर्श को दिशा प्रदान करने वाली सक्रिय शक्ति के रूप में भी उपस्थित है।[1]

सीता, कौशल्या, सुमित्रा, कैकेयी, तारा, मन्दोदरी, अहल्या और शबरी जैसे स्त्री–पात्र नारी–जीवन के अलग–अलग पक्षों को उद्घाटित करते हैं। विशेषतः सीता के व्यक्तित्व में दाम्पत्य–निष्ठा के साथ स्वाभिमान, स्वतंत्र निर्णय, विपरीत परिस्थितियों में धैर्य और नैतिक दृढ़ता का उल्लेखनीय समन्वय दिखाई देता है।[2] तारा राजनीतिक दूरदर्शिता एवं नीति–बुद्धि का प्रतिनिधित्व करती हैं, जबकि मन्दोदरी अन्याय के विरुद्ध विवेकपूर्ण असहमति का स्वर प्रस्तुत करती हैं।

प्रस्तुत शोध–पत्र में 'नारी–चेतना' को आधुनिक स्त्री–विमर्श की अवधारणा मात्र के रूप में प्राचीन ग्रन्थ पर आरोपित न करके, नारी के आत्मबोध, स्वाभिमान, निर्णय–क्षमता, सामाजिक स्थिति, कर्तव्य–बोध, नैतिक विवेक और प्रतिरोध–चेतना के व्यापक संदर्भ में ग्रहण किया गया है। वाल्मीकि रामायण को अध्ययन का मूल आधार बनाते हुए आवश्यकतानुसार महाभारत, कालिदास के रघुवंश एवं कुमारसम्भव आदि संस्कृत ग्रन्थों में अभिव्यक्त नारी–दृष्टि को भी समीक्षात्मक संदर्भ के रूप में ग्रहण किया जाएगा।[3]

इस अध्ययन का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि वाल्मीकि रामायण की नारी केवल त्याग और सहनशीलता की प्रतिमूर्ति नहीं है, बल्कि अनेक प्रसंगों में वह विचारशील, निर्णयक्षम, स्वाभिमानी और नैतिक रूप से सजग व्यक्तित्व के रूप में सामने आती है। इस प्रकार रामायण में नारी–चेतना का अध्ययन प्राचीन भारतीय समाज की स्त्री–दृष्टि को समझने के साथ–साथ भारतीय साहित्य में नारी–अस्मिता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझने में भी सहायक सिद्ध होता है।

बीज शब्द : वाल्मीकि रामायण, नारी–चेतना, सीता, नारी–अस्मिता, स्वाभिमान, धर्म, स्त्री–विमर्श, संस्कृत महाकाव्य, भारतीय संस्कृति।

---

[1] वाल्मीकि, श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, बालकाण्ड, गीताप्रेस, गोरखपुर।
[2] वाल्मीकि, श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, अयोध्याकाण्ड, राम–सीता वनगमन प्रसंग।
[3] बलदेव उपाध्याय, संस्कृत साहित्य का इतिहास, शारदा निकेतन, वाराणसी।

प्रस्तावना : भारतीय साहित्य में नारी की प्रतिष्ठा

भारतीय संस्कृति में नारी की अवधारणा केवल सामाजिक संरचना के एक अंग के रूप में विकसित नहीं हुई, बल्कि उसे परिवार, संस्कार, ज्ञान, धर्म और सांस्कृतिक निरन्तरता की महत्त्वपूर्ण संवाहिका माना गया है। वैदिक साहित्य में अनेक स्त्रियाँ मन्त्रद्रष्ट्री ऋषिकाओं के रूप में प्रतिष्ठित हैं। घोषा, अपाला, लोपामुद्रा आदि के नाम वैदिक साहित्य में स्त्री की बौद्धिक एवं आध्यात्मिक उपस्थिति की प्राचीनता को प्रमाणित करते हैं।[4] उपनिषदों में गार्गी और मैत्रेयी का दार्शनिक संवाद इस परम्परा को और अधिक विकसित रूप में प्रस्तुत करता है। महाकाव्यकाल में प्रवेश करने पर नारी के व्यक्तित्व का क्षेत्र और व्यापक हो जाता है। रामायण में सीता, कौशल्या, सुमित्रा, कैकेयी, तारा और मन्दोदरी जैसे चरित्र हैं, तो महाभारत में कुन्ती, गांधारी और द्रौपदी जैसे स्त्री–पात्र नारी के धैर्य, प्रश्नाकुलता, नीति–बोध तथा आत्मसम्मान के विभिन्न आयाम सामने लाते हैं। दोनों महाकाव्यों में परिस्थितियाँ भिन्न हैं, फिर भी स्त्री की उपस्थिति अनेक निर्णायक प्रसंगों में कथा की दिशा को प्रभावित करती है। वाल्मीकि रामायण की विशेषता यह है कि उसके नारी–पात्र एक ही आदर्श के प्रतिरूप नहीं हैं। सीता की चेतना और कैकेयी की चेतना में पर्याप्त अंतर है, कौशल्या का मातृत्व सुमित्रा के कर्तव्यप्रधान मातृत्व से अपना अलग स्वर ग्रहण करता है, तारा का व्यावहारिक राजनीतिक विवेक और मन्दोदरी का नैतिक प्रतिरोध भी अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैं। अतः रामायण में नारी को किसी एक निश्चित प्रतिमान में बाँधकर देखना उसकी नारी–दृष्टि के बहुआयामी स्वरूप को सीमित कर देता है।[5]

यही विविधता प्रस्तुत शोध की मूल भूमि है। यहाँ यह प्रश्न महत्त्वपूर्ण है कि क्या रामायण की नारी केवल तत्कालीन सामाजिक मर्यादाओं का पालन करने वाली पात्र है, अथवा उन्हीं मर्यादाओं के भीतर वह अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व भी निर्मित करती है? इस प्रश्न का उत्तर रामायण के विभिन्न स्त्री–पात्रों के कथनों, निर्णयों, प्रतिक्रियाओं और संकट के समय उनके व्यवहार की समीक्षा द्वारा खोजा जा सकता है।

नारी–चेतना : अर्थ, स्वरूप और अध्ययन की दृष्टि

'नारी–चेतना' आधुनिक साहित्यिक विमर्श में व्यापक अर्थ ग्रहण करने वाली संकल्पना है। किन्तु प्राचीन संस्कृत साहित्य का अध्ययन करते समय आधुनिक अवधारणाओं को यथावत् प्राचीन समाज पर आरोपित करना ऐतिहासिक दृष्टि से उचित नहीं होगा। इसलिए प्रस्तुत शोध में नारी–चेतना का अर्थमुख्यतः नारी के आत्मबोध, स्वाभिमान, विचार–अभिव्यक्ति, निर्णय–क्षमता, नैतिक विवेक, सामाजिक भूमिका और अन्याय के प्रति प्रतिक्रिया से ग्रहण किया गया है।[6]

---

[4] ऋग्वेद, विभिन्न ऋषिका–सूक्तय वैदिक स्त्री की बौद्धिक परम्परा के संदर्भ में।
[5] व्यास, महाभारत, सभापर्व एवं स्त्रीपर्व, गीताप्रेस, गोरखपुर।
[6] वाल्मीकि, श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, अयोध्याकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड एवं युद्धकाण्ड के प्रमुख नारी–प्रसंग।

इस दृष्टि से वाल्मीकि रामायण का अध्ययन करने पर अनेक महत्त्वपूर्ण तथ्य सामने आते हैं। सीता का राम के साथ वन जाने का निर्णय इसका प्रमुख उदाहरण है। राम उन्हें वन के कष्टों से परिचित कराते हुए अयोध्या में रहने की सलाह देते हैं, किन्तु सीता अपने पक्ष को तर्कपूर्वक प्रस्तुत करती हैं और वनगमन के संकल्प पर दृढ़ रहती हैं।[7] इस प्रसंग में उनका व्यक्तित्व केवल आज्ञापालन करने वाली पत्नी का नहीं, बल्कि अपने जीवन के विषय में स्पष्ट मत रखने वाली स्त्री का भी है।

इसी प्रकार किष्किन्धाकाण्ड में तारा का चरित्र राजनीतिक और परिस्थितिजन्य चेतना की दृष्टि से उल्लेखनीय है। वह वाली को सुग्रीव की पुनः प्राप्त चुनौती के पीछे किसी समर्थ सहयोगी की सम्भावना का संकेत देती है और युद्ध के प्रति सावधान करती है।[8] यहाँ तारा की भूमिका भावनात्मक आग्रह तक सीमित नहीं रहतीय उसके कथन में परिस्थितियों का विश्लेषण और परिणाम का पूर्वानुमान दिखाई देता है।

संस्कृत महाकाव्य–परम्परा में कालिदास के नारी–पात्रों को देखने पर नारी के व्यक्तित्व का एक अन्य सौन्दर्यपूर्ण एवं गरिमामय रूप सामने आता है। कुमारसम्भव की पार्वती अपने निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए तप और आत्मसंयम का मार्ग ग्रहण करती हैं।[9] रामायण की सीता और कुमारसम्भव की पार्वती की परिस्थितियाँ समान नहीं हैं, फिर भी दोनों पात्रों में संकल्प की दृढ़ता स्त्री–व्यक्तित्व की सक्रियता को रेखांकित करती है। इस प्रकार अन्य संस्कृत महाकाव्यों के प्रसंग रामायण की नारी–चेतना की विशेषताओं को अधिक स्पष्ट रूप से समझने में सहायक हो सकते हैं।

वाल्मीकि की नारी–दृष्टि : आदर्श और यथार्थ का समन्वय

वाल्मीकि की काव्य–दृष्टि की महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि उनके पात्र केवल आदर्शों के निर्जीव प्रतीक नहीं बनते। उनमें मानवीय भावनाएँ, अंतर्द्वन्द्व, आशा, भय, प्रेम, क्रोध, करुणा और निर्णय की जटिलता दिखाई देती है। यही विशेषता रामायण के स्त्री–पात्रों को भी जीवन्त बनाती है।

कौशल्या के व्यक्तित्व में एक ओर राजमाता की गरिमा है, दूसरी ओर पुत्र के वनवास से व्यथित माता की स्वाभाविक वेदना। उनका दुःख केवल व्यक्तिगत नहीं रहताय उसके भीतर धर्म और राजकीय निर्णय से उत्पन्न असहायता भी जुड़ी हुई है।[10] इसके विपरीत सुमित्रा संकट के समय लक्ष्मण को भावनात्मक दुर्बलता के स्थान पर कर्तव्य की प्रेरणा देती हैं। इस प्रकार रामायण में मातृत्व भी एकरूप नहीं है– कौशल्या का मातृत्व करुणा से अनुप्राणित है तो सुमित्रा का मातृत्व कर्तव्य और त्याग की असाधारण ऊँचाई ग्रहण करता है।

कैकेयी का चरित्र इससे भी अधिक जटिल है। सामान्यतः उन्हें राम के वनवास का कारण मानकर नकारात्मक दृष्टि से देखा जाता है, परन्तु समीक्षात्मक अध्ययन में उनके चरित्र के

[7] वाल्मीकि, श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, अयोध्याकाण्ड, सीता–राम वनगमन संवाद।
[8] वाल्मीकि, श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, किष्किन्धाकाण्ड, तारा–वाली संवाद।
[9] कालिदास, कुमारसम्भव, पञ्चम सर्ग, पार्वती–तपस्या प्रसंग।
[10] वाल्मीकि, श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, अयोध्याकाण्ड, कौशल्या–विलाप एवं राम–कौशल्या संवाद।

राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक और पारिवारिक आयामों को अलग–अलग समझना आवश्यक है। दशरथ से प्राप्त वरों का प्रयोग करने का उनका निर्णय कथा को निर्णायक दिशा देता है।[11] उनका निर्णय नैतिक आलोचना का विषय अवश्य बनता है, किन्तु साथ ही यह इस तथ्य को भी प्रकट करता है कि राजपरिवार की स्त्री सत्ता और उत्तराधिकार के प्रश्नों से पूर्णतः पृथक् नहीं थी।

यही बिन्दु रामायण की नारी–दृष्टि को सरल निष्कर्षों से बचाता है। वाल्मीकि ने केवल 'आदर्श नारी' का एक साँचा निर्मित नहीं कियाय उन्होंने स्त्री–व्यक्तित्व के भीतर उपस्थित सद्‌गुण, दुर्बलता, विवेक, आकांक्षा और संघर्ष को विविध पात्रों के माध्यम से अभिव्यक्त किया। इस कारण रामायण की नारी–चेतना का समीक्षात्मक अध्ययन साहित्य के साथ तत्कालीन सामाजिक मनोविज्ञान को समझने का भी माध्यम बनता है।

सीता : नारी–चेतना की आधारभूमि

वाल्मीकि रामायण की नारी–चेतना का अध्ययन सीता के बिना सम्भव नहीं है। वे महाकाव्य की केन्द्रीय नारी–पात्र हैं और उनके जीवन की प्रत्येक अवस्था नारी–अस्तित्व के किसी न किसी महत्त्वपूर्ण प्रश्न को सामने लाती है। राजमहल से वन, वन से लंका और संकट से पुनः सामाजिक प्रतिष्ठा के प्रश्न तक उनकी यात्रा केवल कथा की यात्रा नहीं, बल्कि स्त्री के धैर्य, आत्मसम्मान और नैतिक शक्ति की भी यात्रा है।[12]

सीता के व्यक्तित्व का प्रथम महत्त्वपूर्ण पक्ष उनकी निर्णय–क्षमता है। राम के वनवास की सूचना प्राप्त होने पर वे स्वयं उनके साथ वन जाने का निश्चय करती हैं। राम वन के दुःखों और कठिनाइयों का उल्लेख करके उन्हें रोकने का प्रयास करते हैं, परन्तु सीता अपने निर्णय के पक्ष में तर्क प्रस्तुत करती हैं।[13] इस प्रसंग में सीता की वाणी उनके व्यक्तित्व की दृढ़ता का प्रमाण है। वे परिस्थिति द्वारा निष्क्रिय रूप से संचालित नहीं होतीं, बल्कि परिस्थिति के भीतर स्वयं अपना मार्ग चुनती हैं।

सीता की चेतना का दूसरा महत्त्वपूर्ण पक्ष उनका आत्मसम्मान है। रावण द्वारा अपहरण के पश्चात् लंका में वे भौतिक वैभव, भय और दबाव के समक्ष नहीं झुकतीं। अशोकवाटिका का प्रसंग उनके बाह्य असहायत्व और आन्तरिक सामर्थ्य के बीच अद्‌भुत विरोधाभास प्रस्तुत करता है। बाह्य रूप से वे बन्दिनी हैं, किन्तु मानसिक एवं नैतिक स्तर पर रावण उन्हें पराजित नहीं कर पाता।[14] इस अर्थ में सीता की शक्ति शारीरिक अथवा राजनीतिक शक्ति न होकर चरित्र और आत्मनिष्ठा की शक्ति है।

महाभारत की द्रौपदी और रामायण की सीता के अनुभव तथा प्रतिक्रियाएँ भिन्न हैं। द्रौपदी सभा में धर्म और न्याय पर प्रत्यक्ष प्रश्न उठाती हैं, जबकि सीता का प्रतिरोध कई प्रसंगों में

---

[11] वाल्मीकि, श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, अयोध्याकाण्ड, कैकेयी–दशरथ संवाद एवं वरदान प्रसंग।
[12] ए. बी. कीथ, A History of Sanskrit Literature, संस्कृत महाकाव्य परम्परा संबंधी विवेचन।
[13] वाल्मीकि, श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, अयोध्याकाण्ड, राम–सीता वनगमन संवाद।
[14] वाल्मीकि, श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, सुन्दरकाण्ड, अशोकवाटिका एवं सीता–रावण संवाद।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

नैतिक दृढ़ता, तर्क और आत्मसम्मान के रूप में प्रकट होता है।[15] दोनों को एक समान सिद्ध करना उचित नहीं होगा, किन्तु दोनों पात्र यह अवश्य प्रदर्शित करते हैं कि संस्कृत महाकाव्यों में स्त्री केवल घटनाओं की मूक साक्षी नहीं है। वह अपनी परिस्थिति के अनुरूप प्रश्न, निर्णय और प्रतिरोध की भाषा निर्मित करती है।

अतः सीता को केवल सहनशीलता की प्रतिमूर्ति कहना उनके चरित्र के एक पक्ष को स्वीकार करना है। समीक्षात्मक दृष्टि से उनमें सहनशीलता के साथ साहस, प्रेम के साथ स्वाभिमान, दाम्पत्य–निष्ठा के साथ आत्मनिर्णय तथा करुणा के साथ अदम्य मानसिक शक्ति भी विद्यमान है। यही बहुआयामी व्यक्तित्व उन्हें भारतीय महाकाव्य–परम्परा की अत्यन्त महत्त्वपूर्ण नारी बनाता है।

सीता की स्वाभिमान–चेतना एवं आत्मनिर्णय

वाल्मीकि रामायण में सीता का चरित्र भारतीय नारी के स्वाभिमान, आत्मबल और नैतिक दृढ़ता का अत्यन्त प्रभावशाली उदाहरण प्रस्तुत करता है। उनके व्यक्तित्व को केवल पतिव्रता अथवा त्यागमयी पत्नी के रूप में सीमित कर देना उनके चरित्र की व्यापकता के साथ न्याय नहीं करता। सीता अपने जीवन के अनेक निर्णायक अवसरों पर स्वयं विचार करती हैं, अपना पक्ष रखती हैं तथा अपने निर्णय के औचित्य को तर्कपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करती हैं। यही विशेषता उनके चरित्र में नारी–चेतना का सशक्त आधार निर्मित करती है।[16]

राम के वनगमन के समय सीता का व्यवहार इसका प्रथम महत्त्वपूर्ण उदाहरण है। राम उन्हें वन के कष्टों का वर्णन करके अयोध्या में रहने की सलाह देते हैं। किन्तु सीता इस निर्णय को सहज रूप से स्वीकार नहीं करतीं। वे स्पष्ट करती हैं कि सुख और दुःख दोनों अवस्थाओं में पति के साथ रहना उनके द्वारा स्वयं स्वीकार किया गया जीवन–धर्म है। यहाँ उनका वनगमन केवल पारम्परिक पत्नी–धर्म का यांत्रिक निर्वाह नहीं, बल्कि स्वयं चुना गया निर्णय भी है।[17]

सीता की स्वाभिमान–चेतना लंका में और अधिक प्रखर रूप ग्रहण करती है। रावण शक्ति, वैभव और भय– सभी माध्यमों से उनके संकल्प को विचलित करना चाहता है, किन्तु सीता उसके समक्ष आत्मसम्मान से समझौता नहीं करतीं। बाह्य परिस्थितियाँ उनके अनुकूल नहीं हैं, फिर भी उनकी मानसिक स्वतंत्रता अक्षुण्ण रहती है। यह प्रसंग नारी की उस आन्तरिक शक्ति को रेखांकित करता है जिसे किसी बाह्य सत्ता द्वारा सहजता से पराजित नहीं किया जा सकता।[18]

समीक्षात्मक दृष्टि से सीता की यही विशेषता उन्हें संस्कृत महाकाव्य–परम्परा की विशिष्ट नायिका बनाती है। उनका आत्मसम्मान आक्रामकता में नहीं, बल्कि अपने सत्य और नैतिक विश्वास पर अडिग रहने में अभिव्यक्त होता है।

---

[15] व्यास, महाभारत, सभापर्व, द्यूतसभा एवं द्रौपदी–प्रश्न प्रसंग
[16] वाल्मीकि, श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, अयोध्याकाण्ड, राम–सीता संवाद।
[17] वही, अयोध्याकाण्ड, सीता–वनगमन प्रसंग।
[18] वाल्मीकि, श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, सुन्दरकाण्ड, अशोकवाटिका प्रसंग।

सीता के व्यक्तित्व में साहस, धैर्य और नैतिक प्रतिरोध

सीता की नारी–चेतना का दूसरा महत्त्वपूर्ण आयाम उनका धैर्य है। सामान्यतः धैर्य को निष्क्रिय सहनशीलता के अर्थ में ग्रहण किया जाता है, किन्तु सीता के चरित्र में धैर्य सक्रिय नैतिक शक्ति के रूप में सामने आता है। लंका में उनका जीवन इस तथ्य का प्रमाण है कि विपरीत परिस्थितियों में भी व्यक्ति अपने मूल्यों और आत्मसम्मान की रक्षा कर सकता है।

रावण द्वारा बार–बार दबाव डाले जाने के बावजूद सीता का मन विचलित नहीं होता। वे रावण की सत्ता से भयभीत होकर उसके अनुचित प्रस्ताव को स्वीकार नहीं करतीं।[19] उनका प्रतिरोध शस्त्र के माध्यम से नहीं, बल्कि चरित्र की दृढ़ता के माध्यम से है। यही कारण है कि अशोकवाटिका का प्रसंग नारी के आन्तरिक सामर्थ्य का अत्यन्त प्रभावी प्रतीक बन जाता है। हनुमान से भेंट के समय भी सीता की विवेकशीलता स्पष्ट दिखाई देती है। वे तत्काल भावावेश में कोई निर्णय नहीं लेतीं, बल्कि हनुमान की पहचान और विश्वसनीयता के विषय में सावधानीपूर्वक विचार करती हैं।[20] इससे ज्ञात होता है कि संकट ने उनकी निर्णय–शक्ति को समाप्त नहीं किया था।

यदि इस प्रसंग को महाभारत की द्रौपदी के संदर्भ में देखा जाए तो दोनों नारी–पात्रों की प्रतिरोध–पद्धति में उल्लेखनीय भिन्नता दिखाई देती है। द्रौपदी अन्यायपूर्ण परिस्थिति में सभा के समक्ष प्रश्न उठाकर धर्म की वैधता को चुनौती देती हैं।[21] सीता का प्रतिरोध अपेक्षाकृत अन्तर्मुखी, किन्तु उतना ही दृढ़ है। दोनों पात्रों की परिस्थितियाँ अलग हैं, अतः उनकी प्रतिक्रियाओं का स्वर भी अलग है।

इस प्रकार संस्कृत महाकाव्यों की नारी–चेतना का कोई एक निश्चित रूप नहीं है। कहीं वह प्रश्न के रूप में सामने आती है, कहीं नीति–परामर्श के रूप में और कहीं मौन किन्तु अटल नैतिक प्रतिरोध के रूप में।

कौशल्या : मातृत्व, धर्म और नारी–संवेदना

रामायण में कौशल्या का चरित्र मातृत्व की गरिमा और नारी–संवेदना का अत्यन्त मार्मिक स्वरूप प्रस्तुत करता है। वे अयोध्या की महारानी हैं, किन्तु राम के वनवास का समाचार मिलने पर राजकीय पद और प्रतिष्ठा के पीछे छिपी एक माता की पीड़ा सामने आ जाती है। वाल्मीकि ने उनके चरित्र के माध्यम से मातृत्व को केवल वात्सल्य नहीं, बल्कि धर्म, कर्तव्य और व्यक्तिगत संवेदना के संघर्ष के रूप में भी चित्रित किया है।[22]

राम के वनवास से कौशल्या का हृदय व्यथित होता है। एक ओर पुत्र–वियोग का दुःख है और दूसरी ओर राजधर्म एवं पितृवचन की मर्यादा। उनका मन स्वाभाविक रूप से राम को रोकना चाहता है, परन्तु राम द्वारा धर्म और पिता की आज्ञा का महत्त्व समझाए जाने पर वे

[19] वाल्मीकि, श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, सुन्दरकाण्ड, सीता–रावण संवाद।
[20] वही, सुन्दरकाण्ड, हनुमान–सीता संवाद।
[21] वही, सुन्दरकाण्ड, हनुमान–सीता संवाद।
[22] वाल्मीकि, श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, अयोध्याकाण्ड, कौशल्या–राम संवाद।

अंततः उनके निर्णय को स्वीकार करती हैं।[23] यह स्वीकार निष्क्रियता नहीं, बल्कि व्यक्तिगत वेदना पर धर्मबोध की विजय है।

कौशल्या का चरित्र यह भी स्पष्ट करता है कि रामायण की नारी भावनाशील होने के साथ विचारशील भी है। वह दुःख व्यक्त करती है, प्रश्न करती है और परिस्थिति के नैतिक पक्ष पर विचार करती है। मातृत्व की इसी संवेदनशीलता के कारण कौशल्या का चरित्र महाकाव्य में विशिष्ट स्थान रखता है।

महाभारत की कुन्ती में भी मातृत्व का एक अत्यन्त जटिल स्वरूप दिखाई देता है। कुन्ती अनेक संकटों में अपने पुत्रों को धैर्य और कर्तव्य की प्रेरणा देती हैं।[24] कौशल्या और कुन्ती की परिस्थितियाँ अलग हैं, पर दोनों के माध्यम से भारतीय महाकाव्य नारी के मातृत्व को केवल वात्सल्य तक सीमित नहीं रखते, बल्कि उसे नैतिक उत्तरदायित्व से भी जोड़ते हैं।

सुमित्रा : कर्तव्य–चेतना और त्याग का उदात्त स्वरूप

वाल्मीकि रामायण में सुमित्रा का चरित्र अपेक्षाकृत कम प्रसंगों में उपस्थित होते हुए भी अत्यन्त प्रभावशाली है। उनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि मातृत्व उनके लिए केवल पुत्र को अपने समीप रखने की भावना नहीं, बल्कि उसे उचित कर्तव्य के लिए प्रेरित करने की शक्ति है। जब लक्ष्मण राम के साथ वन जाने का निर्णय लेते हैं, तब सुमित्रा उन्हें रोकने के स्थान पर उनके निर्णय को नैतिक आधार प्रदान करती हैं। वे लक्ष्मण को राम की सेवा और सीता की रक्षा के प्रति सजग रहने की प्रेरणा देती हैं।[25] यह प्रसंग भारतीय महाकाव्य में मातृत्व की अत्यन्त उदात्त व्याख्या प्रस्तुत करता है।

सुमित्रा के चरित्र में नारी–चेतना त्याग और कर्तव्य–बोध के माध्यम से अभिव्यक्त होती है। उनका त्याग विवशता से उत्पन्न नहीं है। वे परिस्थितियों को समझकर अपने पुत्र को धर्मानुकूल आचरण के लिए प्रेरित करती हैं। इसलिए उनके व्यक्तित्व में विवेक, धैर्य और भावनात्मक परिपक्वता का सुंदर समन्वय दिखाई देता है।[26]

कौशल्या और सुमित्रा के मातृत्व का समीक्षात्मक अध्ययन करने पर एक रोचक अंतर सामने आता है। कौशल्या का मातृत्व पुत्र–वियोग की करुणा को मुखर करता है, जबकि सुमित्रा का मातृत्व त्याग और कर्तव्य की ओर अधिक उन्मुख दिखाई देता है। दोनों रूप परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि मातृचेतना के दो अलग–अलग मानवीय आयाम हैं।

कैकेयी : नारी–मनोविज्ञान और सत्ता–चेतना

रामायण के नारी–पात्रों में कैकेयी का चरित्र सर्वाधिक विवादास्पद और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से जटिल है। लोकपरम्परा में उन्हें प्रायः राम के वनवास का कारण मानकर नकारात्मक रूप में प्रस्तुत किया जाता है, किन्तु समीक्षात्मक अध्ययन में किसी पात्र को केवल उसके परिणामों के आधार पर समझना पर्याप्त नहीं होता।

---

[23] वही, अयोध्याकाण्ड, राम के वनगमन का प्रसंग।
[24] व्यास, महाभारत, आदिपर्व एवं वनपर्व, कुन्ती–संबंधी प्रसंग।
[25] वाल्मीकि, श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, अयोध्याकाण्ड, सुमित्रा–लक्ष्मण संवाद।
[26] वही, अयोध्याकाण्ड, राम–लक्ष्मण–सीता वनगमन प्रसंग।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

कैकेयी प्रारम्भ से राम–विरोधी नहीं हैं। राम के प्रति उनके स्नेह के संकेत भी कथा में प्राप्त होते हैं। मन्थरा के संवाद के बाद उनके दृष्टिकोण में परिवर्तन आता है। उत्तराधिकार, भरत के भविष्य और राजसत्ता के विषय में उत्पन्न आशंका धीरे–धीरे उनके निर्णय को प्रभावित करती है।[27] यह परिवर्तन रामायण में नारी–मनोविज्ञान के जटिल चित्रण का उदाहरण है। दशरथ द्वारा पूर्व में दिए गए दो वरों का स्मरण कराकर कैकेयी भरत के राज्याभिषेक तथा राम के वनवास की माँग करती हैं।[28] उनके निर्णय का नैतिक औचित्य प्रश्नांकित किया जा सकता है, किन्तु इस प्रसंग का एक दूसरा पक्ष यह है कि कैकेयी राजकीय निर्णय–प्रक्रिया को प्रभावित करने की क्षमता रखती हैं। वे निष्क्रिय राजमहिषी नहीं हैं।

नारी–चेतना का अर्थ प्रत्येक स्त्री–निर्णय को नैतिक रूप से उचित सिद्ध करना नहीं है। चेतना का संबंध निर्णय की सक्रियता से भी है, जबकि उसकी नैतिक समीक्षा अलग प्रश्न है। इसी कारण कैकेयी का चरित्र शोध की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। वह दिखाता है कि स्त्री की सक्रियता सकारात्मक और नकारात्मक दोनों परिणाम उत्पन्न कर सकती है।

कैकेयी के चरित्र का समीक्षात्मक पुनर्मूल्यांकन

कैकेयी के चरित्र की समीक्षा करते समय उनके निर्णय और उनके व्यक्तित्व के बीच अंतर करना आवश्यक है। यदि केवल राम–वनवास के परिणाम को आधार बनाया जाए तो उनका चरित्र एक नकारात्मक पात्र तक सीमित हो जाता है, किन्तु वाल्मीकि द्वारा प्रस्तुत पूर्ववर्ती प्रसंगों को ध्यान में रखने पर उनका व्यक्तित्व अधिक जटिल दिखाई देता है।[29]

कैकेयी साहसी और प्रभावशाली राजमहिषी के रूप में भी चित्रित हैं। दशरथ के साथ उनके संबंध केवल पारिवारिक नहीं, बल्कि विश्वास पर आधारित हैं। मन्थरा इसी विश्वास और मातृभाव के भीतर असुरक्षा उत्पन्न करती है।[30] इस दृष्टि से कैकेयी का निर्णय मनोवैज्ञानिक प्रभाव, मातृ–मोह और सत्ता–संबंधी आशंका के संयुक्त परिणाम के रूप में पढ़ा जा सकता है। यहाँ रामायण नारी–चरित्र का आदर्शीकरण मात्र नहीं करती। कैकेयी में मानवीय दुर्बलता, संशय और मोह भी हैं। यही तथ्य वाल्मीकि के चरित्र–चित्रण को यथार्थपरक बनाता है। यदि सीता नारी के आत्मसम्मान का उच्च रूप प्रस्तुत करती हैं, तो कैकेयी नारी–मन की उन दुर्बलताओं की ओर संकेत करती हैं जो अनुचित परामर्श और असुरक्षा से प्रभावित हो सकती हैं। महाभारत की गांधारी का प्रसंग इस संदर्भ में विचारणीय है। गांधारी पुत्र–स्नेह से जुड़ी होने के बावजूद अनेक अवसरों पर दुर्योधन के अनुचित आचरण से सहमत नहीं दिखाई देतीं।[31] कैकेयी और गांधारी के मातृत्व की परिस्थितियाँ अलग हैं, फिर भी दोनों चरित्र यह प्रश्न सामने लाते हैं कि मातृभाव और नैतिक विवेक के संघर्ष में निर्णय किस प्रकार निर्मित होता है।

---

[27] वाल्मीकि, श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, अयोध्याकाण्ड, मन्थरा–कैकेयी संवाद।
[28] वही, अयोध्याकाण्ड, कैकेयी–दशरथ वरदान प्रसंग।
[29] बलदेव उपाध्याय, संस्कृत साहित्य का इतिहास, रामायण के चरित्र–चित्रण संबंधी विवेचन।
[30] वाल्मीकि, श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, अयोध्याकाण्ड, मन्थरा–कैकेयी प्रसंग।
[31] व्यास, महाभारत, उद्योगपर्व, गांधारी–दुर्योधन संबंधी प्रसंग।

तारा : राजनीतिक चेतना, बुद्धिमत्ता और दूरदर्शिता

रामायण में तारा का चरित्र नारी की राजनीतिक बुद्धिमत्ता और व्यावहारिक विवेक का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण उदाहरण है। किष्किन्धाकाण्ड में तारा केवल वाली की पत्नी के रूप में उपस्थित नहीं होतीं, बल्कि संकट की स्थिति का विश्लेषण करने वाली बुद्धिमती सलाहकार के रूप में सामने आती हैं।[32]

सुग्रीव द्वारा पुनः वाली को युद्ध की चुनौती दिए जाने पर तारा परिस्थिति की असामान्यता को पहचान लेती हैं। जिस सुग्रीव को पहले पराजय मिली थी, उसका पुनः आत्मविश्वास के साथ चुनौती देना उनके लिए किसी नई शक्ति के समर्थन का संकेत है। इसलिए वे वाली को सावधान करती हैं।[33] तारा का यह अनुमान आगे की घटनाओं से सार्थक सिद्ध होता है। यह प्रसंग नारी–चेतना के अध्ययन में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि यहाँ स्त्री का ज्ञान घरेलू जीवन तक सीमित नहीं है। वह राज्य, शक्ति–संतुलन, मित्रता और संभावित राजनीतिक परिणामों का आकलन करती है। तारा की सलाह को वाली स्वीकार नहीं करता और उसका परिणाम घातक सिद्ध होता है।[34]

वाली की मृत्यु के बाद भी तारा का चरित्र केवल शोक तक सीमित नहीं रहता। उनके विलाप में प्रेम और करुणा अवश्य है, किन्तु किष्किन्धा की राजनीतिक परिस्थिति से उनका संबंध भी बना रहता है। इस दृष्टि से तारा रामायण में बुद्धि, भाव और राजनीतिक समझ के समन्वित नारी–व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व करती हैं।[35]

मन्दोदरी : नैतिक विवेक और प्रतिरोध–चेतना

लंका के राजपरिवार में मन्दोदरी का चरित्र नारी की नैतिक दृष्टि और विवेकशीलता का महत्त्वपूर्ण प्रतिनिधित्व करता है। वह रावण की पत्नी हैं, परन्तु पति के प्रति संबंध उन्हें सत्य और असत्य का विवेक छोड़ने के लिए बाध्य नहीं करता। यही उनके चरित्र की विशेषता है। रावण का अहंकार और अनुचित आचरण अन्ततः लंका के विनाश का कारण बनता है। मन्दोदरी के चरित्र से यह संकेत मिलता है कि राजकीय वैभव और शक्ति के बीच भी नैतिक चेतना जीवित रह सकती है। रावण की मृत्यु के पश्चात् उनका विलाप केवल पति–वियोग का भाव नहीं है, उसमें रावण के अहंकार और उसके परिणाम का बोध भी निहित है।[36]

मन्दोदरी की चेतना का महत्त्व इस बात में है कि वे संबंध और नैतिकता के बीच अंतर कर सकती हैं। भारतीय साहित्य में पत्नी–धर्म का अर्थ पति के प्रत्येक कर्म का अन्धसमर्थन नहीं माना जा सकता। मन्दोदरी के प्रसंग में नारी की विवेकशीलता इसी बिन्दु पर सामने आती है।

[32] वाल्मीकि, श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, अयोध्याकाण्ड, दशरथ–कैकेयी संवाद।
[33] वाल्मीकि, श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, किष्किन्धाकाण्ड, तारा–वाली संवाद।
[34] वही, किष्किन्धाकाण्ड, वाली–सुग्रीव युद्ध प्रसंग।
[35] वाल्मीकि, श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, किष्किन्धाकाण्ड, वाली–वधोत्तर तारा–विलाप प्रसंग।
[36] वाल्मीकि, श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, युद्धकाण्ड, रावण–वधोत्तर मन्दोदरी–विलाप।

महाभारत में गांधारी का चरित्र भी कुछ सीमा तक ऐसा नैतिक प्रश्न उपस्थित करता है। वह अपने पुत्रों के प्रति स्नेह रखती हैं, किन्तु धर्म–अधर्म का भेद भी जानती हैं।[37] इस प्रकार मन्दोदरी और गांधारी दोनों के माध्यम से महाकाव्य–परम्परा यह संकेत करती है कि नारी का पारिवारिक संबंध उसकी नैतिक दृष्टि को अनिवार्यतः समाप्त नहीं करता।

मन्दोदरी का चरित्र यह भी स्पष्ट करता है कि नारी–चेतना केवल स्वयं के अधिकार की चेतना नहीं है, बल्कि परिवार और समाज को विनाशकारी निर्णयों से बचाने की नैतिक जिम्मेदारी भी है। जब वह अनुचित आचरण के परिणामों को पहचानती है, तब उसका व्यक्तित्व एक विवेकशील राजमहिषी के रूप में सामने आता है। इसीलिए मन्दोदरी को रामायण की उन स्त्रियों में रखा जा सकता है जो संबंधों से बँधी होने के बावजूद नैतिक सत्य के प्रति सजग रहती हैं।[38]

अहल्या : नारी, सामाजिक न्याय और पुनर्प्रतिष्ठा

वाल्मीकि रामायण में अहल्या का प्रसंग अपेक्षाकृत संक्षिप्त होते हुए भी नारी की सामाजिक प्रतिष्ठा, दण्ड और पुनर्स्वीकार से जुड़े अनेक गंभीर प्रश्न प्रस्तुत करता है। इस प्रसंग को केवल धार्मिक चमत्कार के रूप में पढ़ने के बजाय सामाजिक एवं मानवीय दृष्टि से देखने पर नारी–चेतना का एक अलग आयाम सामने आता है।

अहल्या का आख्यान बालकाण्ड में विश्वामित्र द्वारा राम को सुनाया जाता है। गौतम के शाप के कारण उन्हें दीर्घकाल तक समाज से पृथक् अवस्था में रहना पड़ता है और राम के आगमन से उनकी पुनर्प्रतिष्ठा का मार्ग खुलता है।[39] इस प्रसंग की व्याख्या विभिन्न रामायण–परम्पराओं में भिन्न–भिन्न रूप में विकसित हुई हैय अतः मूल वाल्मीकीय आख्यान और उत्तरवर्ती लोकप्रचलित रूपों के बीच भेद रखना आवश्यक है।

समीक्षात्मक दृष्टि से अहल्या–प्रसंग स्त्री के प्रति सामाजिक निर्णय की प्रकृति पर विचार करने का अवसर देता है। अपराध, दण्ड, परिस्थितिजन्य उत्तरदायित्व और पुनर्स्वीकारकृये सभी प्रश्न इस आख्यान में निहित हैं।[40] विशेष रूप से पुनर्प्रतिष्ठा का तत्व यह संकेत देता है कि सामाजिक बहिष्कार अंतिम अवस्था नहीं माना गया। अहल्या का प्रसंग नारी–चेतना की मुखर अभिव्यक्ति की अपेक्षा नारी के संबंध में निर्मित सामाजिक दृष्टि की समीक्षा के लिए अधिक महत्त्वपूर्ण है। इस कारण प्रस्तुत शोध में अहल्या को सीता अथवा तारा के समान सक्रिय निर्णयकर्ता न मानते हुए, नारी की सामाजिक स्थिति और न्याय–बोध से संबंधित एक विशिष्ट प्रसंग के रूप में देखा जाना उचित है। यह प्रसंग यह प्रश्न भी उठाता है कि सामाजिक व्यवस्था में दण्ड का उद्देश्य केवल बहिष्कार होना चाहिए अथवा पुनर्स्थापन की संभावना भी बनी रहनी चाहिए। अहल्या की पुनर्प्रतिष्ठा भारतीय आख्यान परम्परा में करुणा,

[37] वेदव्यास, महाभारत, उद्योगपर्व एवं स्त्रीपर्व, गांधारी–संबंधी प्रसंग।
[38] वाल्मीकि, श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, युद्धकाण्ड, लंका एवं रावण–वध प्रसंग।
[39] वाल्मीकि, श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, बालकाण्ड, अहल्या–उद्धार प्रसंग।
[40] वही, बालकाण्ड, गौतम–अहल्या आख्यान।

क्षमा और सामाजिक स्वीकृति की संभावनाओं को रेखांकित करती है।[41] इस दृष्टि से अहल्या का चरित्र नारी की गरिमा और पुनर्वास से संबंधित विमर्श के लिए विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

बरी : सामाजिक समावेश और आध्यात्मिक चेतना

रामायण में शबरी का प्रसंग नारी–चेतना के आध्यात्मिक पक्ष को समझने के लिए महत्त्वपूर्ण है। शबरी का व्यक्तित्व राजमहलों की स्त्रियों से सर्वथा भिन्न सामाजिक और आध्यात्मिक परिवेश में विकसित हुआ है। वे तपस्विनी के रूप में राम की प्रतीक्षा करती हैं और गुरु–परम्परा के प्रति निष्ठा रखती हैं।[42]

यहाँ विशेष सावधानी आवश्यक है कि शबरी से संबंधित अनेक लोकप्रिय कथाएँ उत्तरवर्ती रामकथा–परम्परा में विकसित हुई हैं। वाल्मीकि रामायण के मूल पाठ में शबरी का प्रसंग मुख्यतः उनकी तपस्या, गुरु–निष्ठा और राम के आतिथ्य से जुड़ा है। अतः शोध में लोकप्रचलित आख्यान और वाल्मीकीय विवरण को एक मान लेना उचित नहीं होगा।

शबरी की महत्ता इस तथ्य में है कि आध्यात्मिक उपलब्धि को केवल राजवंश, वैभव अथवा सामाजिक प्रतिष्ठा से संबद्ध नहीं किया गया। उनका तपस्वी जीवन यह दर्शाता है कि नारी का आध्यात्मिक व्यक्तित्व भी स्वतंत्र अध्ययन का विषय है।[43] राम उनके आश्रम में पहुँचते हैं और उनका आतिथ्य स्वीकार करते हैं। यह प्रसंग रामायण की व्यापक आध्यात्मिक दृष्टि को रेखांकित करता है। यदि कुमारसम्भव में पार्वती की तपस्या को स्मरण किया जाए तो संस्कृत काव्य–परम्परा में नारी की आध्यात्मिक साधना का एक और रूप सामने आता है।[44] पार्वती और शबरी की सामाजिक तथा कथात्मक स्थितियाँ अत्यन्त भिन्न हैं, किन्तु दोनों में साधना, निष्ठा और लक्ष्य के प्रति दृढ़ता नारी की आन्तरिक चेतना को प्रतिष्ठित करती है।

शबरी का चरित्र यह भी बताता है कि आध्यात्मिक गरिमा बाह्य सामाजिक प्रतिष्ठा से स्वतंत्र हो सकती है। उनके व्यक्तित्व में विनम्रता और आत्मविश्वास का समन्वय है। इस प्रकार शबरी रामायण की नारी–चेतना में उस आयाम को जोड़ती हैं जहाँ स्त्री की पहचान उसके कुल, पद या वैभव से नहीं, बल्कि उसकी साधना, श्रद्धा और आन्तरिक पवित्रता से निर्मित होती है।

रामायण और अन्य संस्कृत महाकाव्यों में नारी–चेतना : समीक्षात्मक परिप्रेक्ष्य

वाल्मीकि रामायण की नारी–चेतना को व्यापक संस्कृत महाकाव्य–परम्परा के संदर्भ में देखने पर उसके अनेक विशिष्ट आयाम अधिक स्पष्ट होते हैं। रामायण की सीता, तारा, कौशल्या, सुमित्रा और मन्दोदरी हों अथवा महाभारत की द्रौपदी, कुन्ती और गांधारीकृप्रत्येक स्त्री–पात्र अपनी विशिष्ट परिस्थिति के भीतर धर्म, कर्तव्य, आत्मसम्मान और सामाजिक उत्तरदायित्व से संवाद करता दिखाई देता है।

---

[41] बलदेव उपाध्याय, संस्कृत साहित्य का इतिहास, रामायण संबंधी विवेचन।
[42] वाल्मीकि, श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, अरण्यकाण्ड, शबरी–राम मिलन प्रसंग।
[43] वही, अरण्यकाण्ड, शबरी की गुरु–निष्ठा एवं आश्रम संबंधी वर्णन।
[44] कालिदास, कुमारसम्भवम्, पञ्चम सर्ग, पार्वती–तपस्या।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

सीता और द्रौपदी इस संदर्भ में दो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण किन्तु भिन्न व्यक्तित्व हैं। सीता की शक्ति मुख्यतः नैतिक दृढ़ता, आत्मसम्मान और संकट में अडिग रहने के रूप में अभिव्यक्त होती है। दूसरी ओर द्रौपदी का व्यक्तित्व प्रश्न, तर्क और न्याय की प्रत्यक्ष माँग के माध्यम से अधिक मुखर दिखाई देता है। द्यूतसभा में द्रौपदी द्वारा धर्म–संबंधी प्रश्न उठाना उनके वैचारिक साहस का प्रमाण है।[45] दोनों की अभिव्यक्ति–पद्धति अलग होने पर भी आत्मसम्मान उनके व्यक्तित्व का केंद्रीय तत्त्व है। कालिदास के कुमारसम्भव की पार्वती नारी के संकल्प और साधना का भिन्न रूप प्रस्तुत करती हैं। वे अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए तपस्या करती हैं और कठिन साधना से पीछे नहीं हटतीं।[46] रघुवंश में भी राजवंशीय नारी–पात्रों के माध्यम से दाम्पत्य, मातृत्व और राजकीय जीवन के विविध सांस्कृतिक आदर्श अभिव्यक्त हुए हैं।[47] इस प्रकार संस्कृत महाकाव्य नारी को केवल सौन्दर्य की वस्तु के रूप में प्रस्तुत नहीं करतेय उसके भीतर भाव, विचार, तप, धर्म और निर्णय के विविध रूप भी प्रतिष्ठित करते हैं।

फिर भी वाल्मीकि रामायण की विशेषता उसकी नारी–पात्रों की विविधता में है। सीता में स्वाभिमान और धैर्य है, कौशल्या में मातृ–संवेदनाय सुमित्रा में त्याग और कर्तव्य कैकेयी में निर्णय और उसकी नैतिक जटिलताय तारा में राजनीतिक विवेकय मन्दोदरी में नैतिक चेतावनीय अहल्या के प्रसंग में सामाजिक पुनर्प्रतिष्ठा का प्रश्न और शबरी में आध्यात्मिक निष्ठा का स्वर दिखाई देता है। अतः रामायण में नारी–चेतना को किसी एक आधुनिक परिभाषा में सीमित करना उचित नहीं होगा। इसकी वास्तविक विशेषता इसकी बहुआयामिता में है। यहाँ नारी कभी प्रश्न करती है, कभी निर्णय लेती है, कभी नीति का परामर्श देती है, कभी अन्याय का प्रतिरोध करती है और कभी त्याग एवं साधना के माध्यम से अपने व्यक्तित्व की शक्ति प्रकट करती है। समीक्षात्मक निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि वाल्मीकि ने नारी को केवल आदर्शीकृत प्रतिमा बनाकर प्रस्तुत नहीं किया। उनके स्त्री–पात्र मानवीय गुण–दोष, संवेदना, विवेक और संघर्ष से युक्त हैं। यही मानवीयता रामायण की नारी–चेतना को कालातीत अध्ययन–विषय बनाती है। अन्य संस्कृत महाकाव्यों के नारी–पात्रों के संदर्भ से यह तथ्य और स्पष्ट होता है कि भारतीय महाकाव्य–परम्परा में नारी की उपस्थिति कथा की परिधि में नहीं, बल्कि अनेक बार उसके नैतिक और वैचारिक केन्द्र में है।[48]

रामायण में नारी की सामाजिक स्थिति और गरिमा

वाल्मीकि रामायण में नारी की सामाजिक स्थिति का स्वरूप बहुआयामी है। वह परिवार की केन्द्रीय इकाई होने के साथ–साथ धार्मिक, नैतिक और कभी–कभी राजनीतिक निर्णयों में भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराती है। रामायण के स्त्री–पात्रों का अध्ययन यह संकेत देता है कि तत्कालीन सामाजिक संरचना में नारी की भूमिका केवल गृहस्थ जीवन तक सीमित नहीं थी। कौशल्या, कैकेयी और सुमित्रा राजपरिवार की सदस्य होते हुए राज्य की गतिविधियों से

[45] वेदव्यास, महाभारत, सभापर्व, द्यूतसभा में द्रौपदी के प्रश्नों का प्रसंग।
[46] कालिदास, कुमारसम्भवम्, पञ्चम सर्ग, पार्वती की तपस्या।
[47] कालिदास, रघुवंशम्, विभिन्न सर्गों में राजवंशीय नारी–चरित्रों का निरूपण।
[48] वाल्मीकि, श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, बालकाण्ड से युद्धकाण्ड तक प्रमुख नारी–पात्रों से संबंधित प्रसंग।

परिचित हैंय तारा किष्किन्धा की राजनीतिक परिस्थिति को समझती है और मन्दोदरी लंका की विनाशकारी नीति के परिणामों को पहचानती है।[49]

रामायण में 'पत्नी' की अवधारणा को केवल पति की अनुगामिनी के रूप में नहीं देखा गया। सीता का चरित्र इस संदर्भ में विशेष उल्लेखनीय है। वे राम के जीवन–संघर्ष में सक्रिय रूप से सहभागी बनना चाहती हैं। वनगमन के समय उनका आग्रह यह स्पष्ट करता है कि वे दाम्पत्य को केवल सुख–सुविधा की साझेदारी नहीं, बल्कि सुख–दुःख दोनों में सहभागिता का संबंध मानती हैं।[50]

राजपरिवार की स्त्रियों के लिए धार्मिक और सामाजिक मर्यादाएँ अवश्य थीं, किन्तु इन मर्यादाओं के भीतर उनकी वैचारिक अभिव्यक्ति का स्थान समाप्त नहीं होता। कौशल्या दशरथ की स्थिति और राम के वनवास पर अपनी पीड़ा तथा मत स्पष्ट रूप से व्यक्त करती हैं। कैकेयी तो राजकीय उत्तराधिकार को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं। यद्यपि उनके निर्णय की नैतिक समीक्षा आवश्यक है, तथापि यह घटना यह प्रमाणित करती है कि राजमहिषी पूर्णतः निष्क्रिय राजनीतिक अस्तित्व नहीं थी।

रामायण की स्त्रियों में आत्मसम्मान का भाव भी उनकी सामाजिक गरिमा का सूचक है। सीता रावण की राजसी समृद्धि से प्रभावित नहीं होतीं। वे लंका की सत्ता के सम्मुख स्पष्ट करती हैं कि भौतिक वैभव किसी अन्यायपूर्ण आचरण को सम्माननीय नहीं बना सकता।[51] इस प्रकार स्त्री की गरिमा को उसकी संपत्ति अथवा बाह्य सामाजिक स्थिति के बजाय उसके चरित्र से जोड़ा गया है।

समीक्षात्मक दृष्टि से यह स्वीकार करना भी आवश्यक है कि रामायण का समाज आधुनिक अर्थ में समानाधिकार आधारित समाज नहीं था। उसमें पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना के अनेक संकेत उपस्थित हैं। फिर भी उसी संरचना के भीतर स्त्री के विवेक, वाणी, निर्णय और नैतिक अधिकार की अनेक सशक्त अभिव्यक्तियाँ दिखाई देती हैं। अतः रामायण में नारी की स्थिति का मूल्यांकन न तो पूर्ण आदर्शीकरण के आधार पर उचित है और न ही आधुनिक कसौटियों के एकांगी आरोपण के आधार पर।

नारी और पारिवारिक कर्तव्य : अधिकार तथा आत्मसम्मान का प्रश्न

भारतीय महाकाव्य–परम्परा में परिवार को सामाजिक व्यवस्था की मूल इकाई माना गया है। रामायण में स्त्री इस परिवार की संवेदनात्मक धुरी है। किन्तु पारिवारिक कर्तव्य के साथ उसके व्यक्तिगत आत्मसम्मान और निर्णय की समस्या भी अनेक प्रसंगों में सामने आती है। सीता, कौशल्या, सुमित्रा और कैकेयी चारों के चरित्र इस सत्य को भिन्न–भिन्न ढंग से उद्घाटित करते हैं।

[49] वाल्मीकि, श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, अयोध्याकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड एवं युद्धकाण्ड के नारी–प्रसंग।
[50] वही, अयोध्याकाण्ड, राम–सीता वनगमन संवाद।
[51] वाल्मीकि, श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, सुन्दरकाण्ड, अशोकवाटिका में सीता–रावण संवाद।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

सीता के लिए दाम्पत्य का अर्थ आत्मविलोपन नहीं है। वे राम के प्रति समर्पित हैं, किन्तु आवश्यकता पड़ने पर राम के सामने अपना मत स्पष्ट रूप से रखती हैं। वनगमन के प्रश्न पर उनका तर्कपूर्ण संवाद इसी तथ्य का प्रमाण है।[52] इसलिए सीता के 'पतिव्रता' रूप को उनकी वैचारिक स्वतंत्रता से अलग करके नहीं देखा जाना चाहिए।

सुमित्रा के लिए मातृत्व का अर्थ पुत्र को सदैव अपने पास रखना नहीं, बल्कि उसे धर्मानुकूल कर्तव्य का मार्ग दिखाना है। लक्ष्मण को राम के साथ भेजते समय उनके व्यक्तित्व में त्याग और विवेक का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है।[53] यहाँ मातृत्व अधिकार से अधिक उत्तरदायित्व का रूप ग्रहण करता है।

कौशल्या का व्यक्तित्व एक भिन्न स्थिति प्रस्तुत करता है। वे राम के वनवास से सहमत नहीं हैं और उनकी मातृवेदना स्वाभाविक रूप से मुखर होती है। किन्तु पुत्र की धर्मनिष्ठा को देखकर वे अपने व्यक्तिगत दुःख से ऊपर उठने का प्रयत्न करती हैं। इस प्रकार उनका चरित्र दर्शाता है कि पारिवारिक कर्तव्य का पालन भावनाओं के अभाव में नहीं, बल्कि कभी–कभी गहन अंतर्द्वन्द्व के बीच होता है।[54]

महाभारत में कुन्ती का मातृत्व भी उत्तरदायित्व से जुड़ा है। वह पुत्रों के संकटपूर्ण जीवन में धैर्य और कर्म की प्रेरणा देती हैं। सीता, सुमित्रा, कौशल्या और कुन्ती जैसे पात्रों का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि भारतीय महाकाव्य नारी के पारिवारिक स्वरूप को केवल भावुकता में सीमित नहीं रखते। परिवार में नारी प्रेम, कर्तव्य, त्याग, निर्णय और नैतिक मार्गदर्शन सभी की वाहक हो सकती है।

यहाँ नारी–चेतना का महत्त्व इस बात में है कि वह अपने संबंधों को समझते हुए भी अपने व्यक्तित्व को पूर्णतः समाप्त नहीं करती। पारिवारिक जीवन और आत्मसम्मान के बीच संतुलन रामायण के स्त्री–चरित्रों की महत्त्वपूर्ण विशेषता है।

रामायण में नारी और राजसत्ता

रामायण की नारी–चेतना का एक कम चर्चित किन्तु महत्त्वपूर्ण पक्ष उसका राजसत्ता से संबंध है। अयोध्या, किष्किन्धा और लंका तीनों राजनीतिक क्षेत्रों में नारी–पात्र किसी न किसी रूप में सत्ता की प्रक्रिया के समीप दिखाई देते हैं। कैकेयी, तारा और मन्दोदरी इस दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय हैं।[55]

कैकेयी का निर्णय अयोध्या की उत्तराधिकार–व्यवस्था को पूरी तरह बदल देता है। दशरथ से प्राप्त वरों के आधार पर भरत के राज्याभिषेक और राम के वनवास की माँग करना उनके राजनीतिक प्रभाव को स्पष्ट करता है।[56] यह अलग प्रश्न है कि उनका निर्णय धर्मसंगत था

52 वाल्मीकि, श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, अयोध्याकाण्ड, सीता–राम संवाद।
53 वही, अयोध्याकाण्ड, सुमित्रा–लक्ष्मण संवाद।
54 वही, अयोध्याकाण्ड, कौशल्या–राम संवाद।
55 वेदव्यास, महाभारत, आदिपर्व एवं वनपर्व, कुन्ती–संबंधी प्रसंग।
56 वाल्मीकि, श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, अयोध्याकाण्ड, कैकेयी–दशरथ वरदान प्रसंग।

या नहींय किन्तु यह अवश्य सिद्ध होता है कि राज्य की दिशा बदलने में एक राजमहिषी निर्णायक भूमिका निभा सकती थी।

तारा की राजनीतिक चेतना अधिक संतुलित और विवेकपूर्ण रूप में सामने आती है। वह सुग्रीव की चुनौती में छिपे राजनीतिक परिवर्तन को पहचान लेती हैं। वाली को सावधान करते हुए उनकी वाणी में भावनात्मक आग्रह के साथ रणनीतिक विश्लेषण भी है।[57] इस प्रकार तारा का चरित्र रामायण की स्त्री को राजनीति की समझ से सम्पन्न प्रस्तुत करता है।

मन्दोदरी की भूमिका सत्ता के नैतिक परीक्षण से संबंधित है। लंका की समृद्धि और रावण की शक्ति उनके विवेक को समाप्त नहीं करती। रावण की मृत्यु के बाद उनका विलाप इस तथ्य को रेखांकित करता है कि अनियंत्रित अहंकार और अनुचित कामना शक्तिशाली साम्राज्य को भी विनाश की ओर ले जा सकती है।[58]

महाभारत की गांधारी के माध्यम से भी राजपरिवार की स्त्री और सत्ता का ऐसा ही जटिल संबंध सामने आता है। गांधारी स्वयं सिंहासन पर नहीं हैं, फिर भी राजपरिवार के नैतिक संकटों की साक्षी और अनेक प्रसंगों में चेतावनी देने वाली स्त्री हैं।[59]

इस प्रकार महाकाव्य साहित्य में स्त्री और राजनीति का संबंध केवल प्रत्यक्ष शासन तक सीमित नहीं है। नीति–परामर्श, उत्तराधिकार, नैतिक चेतावनी और पारिवारिक प्रभाव भी सत्ता के महत्त्वपूर्ण आयाम हैं। रामायण की नारी इन्हीं विभिन्न स्तरों पर राजसत्ता से संवाद करती दिखाई देती है।

नारी का आध्यात्मिक स्वरूप : तप, श्रद्धा और आन्तरिक शक्ति

वाल्मीकि रामायण में नारी का व्यक्तित्व केवल सामाजिक और पारिवारिक आयामों में ही नहीं, बल्कि आध्यात्मिक चेतना में भी विकसित हुआ है। शबरी, अहल्या और सीता के अनेक प्रसंग नारी की आन्तरिक साधना, विश्वास तथा चरित्रबल को उद्घाटित करते हैं।

शबरी इस संदर्भ में विशेष महत्त्वपूर्ण हैं। वे गुरु के प्रति निष्ठावान तपस्विनी हैं और दीर्घकालीन साधना में स्थित रहती हैं। राम का उनके आश्रम में आगमन इस आध्यात्मिक साधना की स्वीकृति का प्रतीक बनता है।[60] शबरी की पहचान किसी राजपरिवार या सांसारिक वैभव से नहीं, बल्कि उनकी साधना से निर्मित होती है।

अहल्या का प्रसंग आध्यात्मिकता के साथ प्रायश्चित्त, पुनर्स्वीकार और पुनर्प्रतिष्ठा से जुड़ा हुआ है। उनके जीवन में आया संकट उन्हें कथा से समाप्त नहीं कर देता। राम के आगमन के साथ उनका पुनः सामाजिक–आध्यात्मिक सम्मान स्थापित होता है।[61] यह प्रसंग भारतीय आख्यान परम्परा में पुनरुत्थान की सम्भावना की ओर संकेत करता है।

---

[57] वही, किष्किन्धाकाण्ड, तारा–वाली संवाद।
[58] वही, युद्धकाण्ड, मन्दोदरी–विलाप।
[59] वेदव्यास, महाभारत, उद्योगपर्व एवं स्त्रीपर्व, गांधारी–संबंधी प्रसंग।
[60] वाल्मीकि, श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, अरण्यकाण्ड, शबरी–राम मिलन।
[61] वही, बालकाण्ड, अहल्या–प्रसंग।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

सीता का आध्यात्मिक स्वरूप प्रत्यक्ष तपस्या की अपेक्षा आन्तरिक संयम के माध्यम से अधिक प्रकट होता है। अशोकवाटिका में उनका आत्मसंयम तथा अपने नैतिक विश्वास से विचलित न होना एक प्रकार का आन्तरिक तप है। बाह्य साधनों से वंचित होने पर भी उनकी चेतना और संकल्प अडिग रहते हैं।[62]

कालिदास के कुमारसम्भव में पार्वती की तपस्या इस संदर्भ को और व्यापक करती है। पार्वती कठिन साधना के माध्यम से अपने लक्ष्य के प्रति दृढ़ता प्रदर्शित करती हैं।[63] शबरी और पार्वती की सामाजिक स्थितियाँ भिन्न होने पर भी दोनों के व्यक्तित्व में आध्यात्मिक साधना नारी की सक्रिय शक्ति के रूप में उपस्थित है।

अतः संस्कृत साहित्य में स्त्री की आध्यात्मिकता केवल भक्ति अथवा निष्क्रिय श्रद्धा नहीं है। उसमें तप, संकल्प, गुरु–निष्ठा, आत्मसंयम और लक्ष्य के प्रति अडिगता भी सम्मिलित है।

सीता और द्रौपदी : नारी–स्वाभिमान के दो विशिष्ट स्वर

भारतीय महाकाव्य–परम्परा में सीता और द्रौपदी दो ऐसी स्त्रियाँ हैं जिनके चरित्र ने नारी–अस्मिता और आत्मसम्मान के विमर्श को गहराई से प्रभावित किया है। दोनों को एक–दूसरे का प्रतिरूप मानना उचित नहीं होगा, क्योंकि उनकी परिस्थितियाँ, स्वभाव और प्रतिरोध की पद्धतियाँ भिन्न हैं। फिर भी आत्मसम्मान के स्तर पर उनके चरित्रों में एक महत्त्वपूर्ण वैचारिक साम्य दिखाई देता है।

सीता का प्रतिरोध मूलतः नैतिक दृढ़ता का प्रतिरोध है। रावण के समक्ष वे उसकी सत्ता, वैभव अथवा धमकी को स्वीकार नहीं करतीं। उनका स्वाभिमान इस तथ्य में प्रकट होता है कि संकट के चरम क्षण में भी वे अपने नैतिक निर्णय से समझौता नहीं करतीं।[64]

द्रौपदी की चेतना अधिक मुखर प्रश्नात्मक रूप ग्रहण करती है। द्यूतसभा में वे अपने साथ घटित अन्याय को मौन रूप से स्वीकार नहीं करतीं, बल्कि सभा में उपस्थित पुरुषों के सामने धर्म की वैधता पर प्रश्न उठाती हैं।[65] उनका प्रश्न केवल व्यक्तिगत पीड़ा का नहीं, बल्कि धर्म और अधिकार की व्याख्या का प्रश्न बन जाता है।

सीता की भाषा कई अवसरों पर संयमित किन्तु कठोर नैतिक अस्वीकार की भाषा है, जबकि द्रौपदी की भाषा प्रत्यक्ष तर्क और प्रश्न की भाषा है। इस भिन्नता को नारी–चेतना की कमजोरी अथवा शक्ति के पैमाने पर नहीं, बल्कि उनकी परिस्थितियों के अनुरूप अभिव्यक्ति के भिन्न रूपों के रूप में देखना अधिक उचित है।

दोनों पात्रों का महत्त्व इस बात में है कि वे स्वयं को केवल किसी पुरुष–संबंध के माध्यम से परिभाषित नहीं होने देतीं। उनके भीतर अपने सम्मान की एक ऐसी स्पष्ट चेतना है जो उन्हें अन्याय अथवा अपमान के सामने असहमति व्यक्त करने की शक्ति देती है।[66]

---

[62] वही, सुन्दरकाण्ड, अशोकवाटिका प्रसंग।
[63] कालिदास, कुमारसम्भवम्, पञ्चम सर्ग।
[64] वाल्मीकि, श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, सुन्दरकाण्ड, सीता–रावण संवाद।
[65] वेदव्यास, महाभारत, सभापर्व, द्यूतसभा में द्रौपदी के प्रश्न।
[66] कालिदास, रघुवंशम्, राजवंशीय नारी–चरित्रों से संबंधित प्रसंग।

इस प्रकार सीता और द्रौपदी भारतीय महाकाव्य परम्परा में नारी–स्वाभिमान के दो भिन्न, किन्तु अत्यन्त प्रभावशाली स्वर प्रस्तुत करती हैं– एक नैतिक अडिगता का और दूसरा प्रश्नात्मक न्याय–चेतना का।

कालिदास के काव्य और रामायण की नारी–दृष्टि

वाल्मीकि रामायण में नारी–चेतना के विविध रूपों का अध्ययन करते समय संस्कृत महाकाव्य–परम्परा के अन्य प्रतिनिधि ग्रन्थों की नारी–दृष्टि पर विचार करना समीक्षात्मक अध्ययन को व्यापकता प्रदान करता है। इस दृष्टि से महाकवि कालिदास का साहित्य विशेष महत्त्व रखता है। कालिदास के काव्य में नारी सौन्दर्य और प्रेम की संवाहिका होने के साथ–साथ तप, संकल्प, मर्यादा, मातृत्व, आत्मगौरव और मानसिक दृढ़ता से सम्पन्न व्यक्तित्व के रूप में भी उपस्थित है।

कुमारसम्भव में पार्वती का चरित्र नारी की संकल्प–शक्ति का अत्यन्त प्रभावशाली उदाहरण है। शिव को प्राप्त करने के लिए पार्वती द्वारा तप का मार्ग ग्रहण करना उनके स्वयं के दृढ़ निश्चय की अभिव्यक्ति है। वे कठिन परिस्थितियों से विचलित न होकर अपने लक्ष्य के प्रति अविचल रहती हैं।[67] इस दृष्टि से पार्वती का चरित्र नारी की आध्यात्मिक स्वतंत्रता और आत्मनिर्णय को प्रतिष्ठित करता है।

वाल्मीकि की सीता और कालिदास की पार्वती की परिस्थितियाँ समान नहीं हैं, किन्तु दोनों के व्यक्तित्व में संकल्प की दृढ़ता एक उल्लेखनीय तत्त्व है। राम के वनवास का समाचार मिलने पर सीता राजमहल में सुरक्षित रहने के स्थान पर वनगमन का निर्णय करती हैं। राम द्वारा वन की कठिनाइयों का उल्लेख किए जाने पर भी वे अपने निर्णय से विचलित नहीं होतीं। दूसरी ओर पार्वती कठिन तपस्या को स्वयं स्वीकार करती हैं। दोनों प्रसंग नारी को केवल परिस्थितियों द्वारा संचालित पात्र मानने की धारणा को चुनौती देते हैं।

कालिदास के रघुवंश में भी नारी के दाम्पत्य, मातृत्व और राजकीय मर्यादा से जुड़े अनेक आयाम दिखाई देते हैं।[68] कालिदास की काव्य–दृष्टि में नारी की भावात्मक संवेदनशीलता उसके व्यक्तित्व की दुर्बलता नहीं बनतीय वह प्रेम, त्याग और कर्तव्य के साथ गरिमा को बनाए रखती है।

वाल्मीकि और कालिदास के नारी–चित्रण में अंतर भी महत्त्वपूर्ण है। वाल्मीकि के यहाँ नारी–पात्र अनेक निर्णायक घटनाओं और नैतिक संघर्षों में प्रत्यक्ष रूप से जुड़े हैं। सीता, कैकेयी और तारा के निर्णय कथा के विकास को प्रभावित करते हैं। कालिदास के यहाँ नारी के मनोभावों, सौन्दर्य, प्रेम और तप के सौन्दर्यात्मक पक्ष का अधिक सूक्ष्म विस्तार मिलता है।[69]

---

[67] कालिदास, कुमारसम्भवम्, पञ्चम सर्ग, पार्वती–तपस्या प्रसंग।
[68] कालिदास, रघुवंशम्, राजवंशीय नारी–चरित्रों से संबंधित प्रसंग।
[69] बलदेव उपाध्याय, संस्कृत साहित्य का इतिहास, संस्कृत महाकाव्य एवं कालिदास संबंधी विवेचन।

अतः संस्कृत महाकाव्य–परम्परा में नारी को केवल सौन्दर्य की निष्क्रिय प्रतिमा मानना उचित नहीं है। वाल्मीकि और कालिदास दोनों के साहित्य में वह भाव, विचार, साधना और निर्णय की स्वतंत्र सत्ता से युक्त दिखाई देती है।

नारी–चेतना में स्वाभिमान और नैतिक स्वतंत्रता

वाल्मीकि रामायण में नारी–चेतना का सर्वाधिक प्रभावशाली आधार स्वाभिमान है। यहाँ स्वाभिमान का तात्पर्य अहंकार से नहीं, बल्कि अपने व्यक्तित्व, नैतिक मूल्यों और मानवीय गरिमा के प्रति सजगता से है। सीता, तारा और मन्दोदरी के चरित्र इस चेतना को अलग–अलग परिस्थितियों में अभिव्यक्त करते हैं।

सीता का स्वाभिमान लंका में सर्वाधिक प्रखर रूप में सामने आता है। बाह्य रूप से वे रावण की सत्ता के अधीन लंका में हैं, किन्तु मानसिक स्तर पर रावण उन पर अधिकार स्थापित नहीं कर पाता। अशोकवाटिका में सीता का नैतिक प्रतिरोध इस तथ्य को स्थापित करता है कि व्यक्ति की आन्तरिक स्वतंत्रता को केवल बाह्य शक्ति से समाप्त नहीं किया जा सकता।[70]

नारी–चेतना का दूसरा पक्ष सत्य–असत्य के विषय में स्वतंत्र नैतिक निर्णय है। मन्दोदरी का चरित्र इस दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय है। पारिवारिक संबंध और राजकीय वैभव के बावजूद वह रावण के कर्मों के विनाशकारी परिणाम को पहचानती हैं। उनके चरित्र का महत्त्व इस तथ्य में है कि पत्नी होने का अर्थ पति के प्रत्येक कर्म का विवेकहीन समर्थन करना नहीं है।[71] तारा के चरित्र में यही स्वतंत्र विवेक राजनीतिक स्तर पर दिखाई देता है। वह वाली के निर्णय से सहमत न होकर उसे परिस्थितियों का पुनर्विचार करने की सलाह देती हैं। उनकी दृष्टि भावनात्मक संबंध से आगे जाकर संभावित परिणाम का मूल्यांकन करती है।[72]

महाभारत की द्रौपदी में आत्मसम्मान का स्वर अधिक मुखर और प्रश्नात्मक रूप में प्रकट होता है। द्यूतसभा में उनके प्रश्न धर्म, सत्ता और नारी की गरिमाकृतीनों को एक साथ चुनौती देते हैं।[73] इस संदर्भ में सीता और द्रौपदी की अभिव्यक्ति भिन्न होते हुए भी उनके भीतर आत्मगौरव का मूल तत्त्व समान रूप से महत्त्वपूर्ण है।

इस प्रकार भारतीय महाकाव्य साहित्य में नारी–स्वाभिमान का कोई एक निश्चित रूप नहीं है। कहीं वह मौन किन्तु अडिग नैतिक प्रतिरोध है, कहीं स्पष्ट नीति–परामर्श और कहीं धर्म एवं न्याय के विषय में प्रत्यक्ष प्रश्न। यही विविधता नारी–चेतना को अधिक व्यापक और मानवीय बनाती है।

रामायण की नारी–चेतना : परम्परा और आधुनिक विमर्श

रामायण जैसे प्राचीन महाकाव्य का आधुनिक नारी–विमर्श की दृष्टि से अध्ययन करते समय ऐतिहासिक संदर्भ और आधुनिक वैचारिक अवधारणाओं के बीच संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। आधुनिक युग में नारी–चेतना शिक्षा, समान अवसर, निर्णय–स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता,

---

[70] वाल्मीकि, श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, सुन्दरकाण्ड, अशोकवाटिका एवं सीता–रावण संवाद।
[71] वही, युद्धकाण्ड, मन्दोदरी–संबंधी प्रसंग।
[72] वाल्मीकि, श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, किष्किन्धाकाण्ड, तारा–वाली संवाद।
[73] वेदव्यास, महाभारत, सभापर्व, द्रौपदी–प्रश्न प्रसंग।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

अधिकार और सामाजिक समानता जैसे प्रश्नों से संबद्ध है। रामायण का समाज इन आधुनिक अवधारणाओं से भिन्न ऐतिहासिक–सामाजिक संरचना में विकसित हुआ था। इसलिए आधुनिक शब्दावली को यथावत् रामायण पर आरोपित करना समीक्षात्मक दृष्टि से उचित नहीं होगा। इसके बावजूद रामायण में ऐसे अनेक प्रसंग विद्यमान हैं जिनमें नारी अपने अस्तित्व, सम्मान और निर्णय के प्रति स्पष्ट रूप से सजग दिखाई देती है। सीता का वनगमन इसका महत्त्वपूर्ण उदाहरण है। वह राम के निर्णय की निष्क्रिय अनुयायी बनकर नहीं जातीं, बल्कि स्वयं अपना मत प्रस्तुत करती हैं और वन जाने के पक्ष में तर्क करती हैं।[74]

तारा का चरित्र आधुनिक संदर्भ में नारी की बौद्धिक और नेतृत्व–क्षमता की ओर ध्यान आकर्षित करता है। संकट के समय वह परिस्थितियों का विश्लेषण करती हैं और वाली को विवेकपूर्ण परामर्श देती हैं। उनकी सलाह की उपेक्षा अंततः विनाशकारी सिद्ध होती है।[75] यह प्रसंग संकेत करता है कि निर्णय–प्रक्रिया में विवेकशील स्त्री की आवाज की उपेक्षा गंभीर परिणाम उत्पन्न कर सकती है।

इसी प्रकार मन्दोदरी का नैतिक विवेक आज के संदर्भ में विशेष महत्त्व रखता है। वह संबंधों और सत्ता के कारण उचित–अनुचित का भेद नहीं छोड़ती। नारी की यह नैतिक स्वतंत्रता आधुनिक सामाजिक जीवन के लिए भी प्रासंगिक है।

दूसरी ओर कैकेयी का चरित्र चेतावनी का पक्ष प्रस्तुत करता है। मन्थरा के प्रभाव से उत्पन्न भय और असुरक्षा उनके निर्णय को प्रभावित करते हैं।[76] इससे यह तथ्य सामने आता है कि चेतना का अर्थ केवल निर्णय लेने की स्वतंत्रता नहीं, बल्कि निर्णय के नैतिक परिणाम के प्रति उत्तरदायित्व भी है। अतः रामायण की नारी–चेतना को आधुनिक स्त्री–विमर्श का प्रत्यक्ष पूर्वरूप घोषित करने की अपेक्षा दोनों के मध्य वैचारिक संवाद स्थापित करना अधिक उचित है। रामायण अपने ऐतिहासिक संदर्भ में नारी के स्वाभिमान, निर्णय, कर्तव्य और नैतिक विवेक के अनेक ऐसे सूत्र प्रदान करती है जो वर्तमान समय में भी सार्थक विमर्श की आधारभूमि बन सकते हैं।

नारी–चेतना की समकालीन प्रासंगिकता और मूल्यबोध

वाल्मीकि रामायण की नारी–चेतना की समकालीन प्रासंगिकता उसके पात्रों की हूबहू पुनरावृत्ति में नहीं, बल्कि उनके चरित्रों में निहित मूल्यों के पुनर्पाठ में है। वर्तमान समय में सामाजिक परिस्थितियाँ, पारिवारिक संरचना और नारी की भूमिका में व्यापक परिवर्तन हुए हैं, किन्तु आत्मसम्मान, विवेक, उत्तरदायित्व, साहस और नैतिक स्वतंत्रता जैसे मूल्य आज भी उतने ही महत्त्वपूर्ण हैं।

सीता का चरित्र संकट में आत्मसम्मान और मानसिक दृढ़ता की प्रेरणा देता है। उनके व्यक्तित्व का महत्त्व केवल इस बात में नहीं है कि उन्होंने कठिनाइयाँ सहन कीं, बल्कि इस

---

[74] वाल्मीकि, श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, अयोध्याकाण्ड, राम–सीता वनगमन संवाद।
[75] वाल्मीकि, श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, अयोध्याकाण्ड, राम–सीता वनगमन संवाद।
[76] वही, अयोध्याकाण्ड, मन्थरा–कैकेयी संवाद।

बात में है कि कठिन परिस्थितियों ने उनके नैतिक व्यक्तित्व को समाप्त नहीं किया।[77] इस दृष्टि से सीता की सहनशीलता को निष्क्रियता न मानकर मूल्यनिष्ठ दृढ़ता के रूप में समझना अधिक उचित है।

तारा का चरित्र बुद्धिमत्ता और दूरदर्शिता के सम्मान की आवश्यकता को रेखांकित करता है। आज जब नारी सामाजिक, शैक्षिक, प्रशासनिक और सार्वजनिक जीवन के विविध क्षेत्रों में सक्रिय है, तारा का नीति–विवेक प्रतीकात्मक रूप से यह स्मरण कराता है कि स्त्री की निर्णय–क्षमता को सामाजिक पूर्वाग्रहों के कारण कम नहीं आँका जाना चाहिए।

सुमित्रा का चरित्र मूल्यपरक पारिवारिक संस्कार का उदाहरण है। उनका मातृत्व अधिकार से अधिक उत्तरदायित्व पर आधारित है। वे लक्ष्मण को धर्म और सेवा का मार्ग अपनाने के लिए प्रेरित करती हैं।[78] इस प्रकार उनके चरित्र में परिवार को नैतिक व्यक्तित्व के निर्माण की संस्था के रूप में देखने की दृष्टि निहित है।

शबरी की आध्यात्मिक साधना यह स्थापित करती है कि मनुष्य की गरिमा केवल सामाजिक प्रतिष्ठा और बाह्य वैभव से निर्धारित नहीं होती। साधना, श्रद्धा और आन्तरिक शुद्धता भी व्यक्ति के मूल्य का आधार हो सकती हैं।[79]

महाभारत की द्रौपदी तथा कुमारसम्भव की पार्वती के संदर्भ को जोड़ने पर भारतीय महाकाव्य साहित्य में नारी के अनेक रूप सामने आते हैं– प्रश्न करने वाली नारी, तप करने वाली नारी, नीति का परामर्श देने वाली नारी, मातृत्व का उत्तरदायित्व निभाने वाली नारी और संकट में अपने सम्मान की रक्षा करने वाली नारी।

यही विविधता इस अध्ययन का महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष भी है। नारी–चेतना को केवल विद्रोह अथवा अधिकार की माँग में सीमित नहीं किया जा सकता। उसमें आत्मबोध, विवेक, उत्तरदायित्व, निर्णय, प्रतिरोध, करुणा, साधना और सामाजिक सहभागिता भी सम्मिलित हैं। वाल्मीकि रामायण इन सभी तत्त्वों के अध्ययन के लिए समृद्ध साहित्यिक आधार प्रदान करती है।[80]

उपसंहार

प्रस्तुत शोध–पत्र "वाल्मीकि रामायण में नारी–चेतना : एक समीक्षात्मक अध्ययन" के समग्र अनुशीलन से यह स्पष्ट होता है कि वाल्मीकि रामायण में नारी का स्वरूप एकांगी न होकर बहुआयामी, संवेदनशील, विचारशील तथा मानवीय है। रामायण के नारी–पात्र केवल कथा के विकास में सहायक चरित्र नहीं हैं, अपितु अनेक स्थलों पर वे महाकाव्य के नैतिक, सामाजिक और वैचारिक पक्ष को दिशा प्रदान करते हैं। सीता, कौशल्या, सुमित्रा, कैकेयी, तारा, मन्दोदरी, अहल्या और शबरीकृइन सभी का व्यक्तित्व अपनी विशिष्ट परिस्थितियों में नारी–चेतना के अलग–अलग आयामों को उद्घाटित करता है।

---

[77] वाल्मीकि, श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, सुन्दरकाण्ड, सीता–संबंधी प्रसंग।
[78] वही, अयोध्याकाण्ड, सुमित्रा–लक्ष्मण संवाद।
[79] वही, अरण्यकाण्ड, शबरी–राम मिलन प्रसंग।
[80] कालिदास, कुमारसम्भवम्, पञ्चम सर्गय वेदव्यास, महाभारत, सभापर्व।

सीता रामायण की नारी–चेतना का सर्वाधिक व्यापक और प्रभावशाली स्वरूप प्रस्तुत करती हैं। उनके व्यक्तित्व में त्याग, दाम्पत्य–निष्ठा और सहनशीलता के साथ आत्मसम्मान, निर्णय–क्षमता, नैतिक दृढ़ता तथा प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपने मूल्यों के प्रति अडिग रहने की शक्ति दिखाई देती है। राम के साथ वनगमन के विषय में अपना मत स्पष्ट रूप से रखना उनके आत्मनिर्णय का परिचायक है, जबकि अशोकवाटिका में रावण के प्रलोभन और दबाव के समक्ष अडिग रहना उनके स्वाभिमान तथा नैतिक स्वतंत्रता का प्रमाण है।[81]

कौशल्या और सुमित्रा के माध्यम से मातृत्व की दो भिन्न किन्तु परस्पर पूरक अभिव्यक्तियाँ सामने आती हैं। कौशल्या में मातृस्नेह, पुत्र–वियोग और धर्मसंकट का मार्मिक समन्वय है, जबकि सुमित्रा मातृत्व को कर्तव्य, त्याग और मूल्यपरक संस्कार की ऊँचाई प्रदान करती हैं। लक्ष्मण को राम की सेवा के लिए प्रेरित करने में उनका विवेकपूर्ण मातृत्व स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।[82]

कैकेयी का चरित्र नारी–चेतना के अध्ययन में एक जटिल मनोवैज्ञानिक आयाम प्रस्तुत करता है। उनके निर्णय को नैतिक रूप से उचित सिद्ध नहीं किया जा सकता, किन्तु उनके माध्यम से यह अवश्य स्पष्ट होता है कि रामायण की नारी राजकीय निर्णयों से पूर्णतः पृथक् नहीं है। मन्थरा के प्रभाव, मातृ–मोह, असुरक्षा और राजसत्ता से जुड़े प्रश्न उनके व्यक्तित्व को मनोवैज्ञानिक अध्ययन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण बनाते हैं।

तारा के चरित्र में नारी की राजनीतिक सूझ–बूझ और दूरदर्शिता अत्यन्त प्रभावशाली रूप में अभिव्यक्त हुई है। वह वाली को परिस्थितियों की गंभीरता समझाने का प्रयास करती हैं और संभावित संकट को पहले ही पहचान लेती हैं। मन्दोदरी के व्यक्तित्व में नैतिक विवेक की प्रधानता दिखाई देती है। पारिवारिक संबंध और राजकीय वैभव उन्हें उचित–अनुचित के विवेक से वंचित नहीं करते।[83]

अहल्या का आख्यान नारी की सामाजिक प्रतिष्ठा, दण्ड और पुनर्स्वीकार से जुड़े प्रश्नों को सामने लाता है, जबकि शबरी का चरित्र नारी की आध्यात्मिक साधना, गुरु–निष्ठा और आन्तरिक गरिमा को प्रतिष्ठित करता है। इस प्रकार वाल्मीकि ने राजमहल से आश्रम तक नारी के विविध सामाजिक एवं आध्यात्मिक रूपों को स्थान दिया है।

प्रस्तुत अध्ययन में महाभारत की द्रौपदी, कुन्ती और गांधारी तथा कालिदास के कुमारसम्भव की पार्वती जैसे पात्रों का संदर्भ ग्रहण करने से यह तथ्य और स्पष्ट हुआ कि संस्कृत महाकाव्य–परम्परा में नारी–चेतना का कोई एक निश्चित स्वरूप नहीं है। द्रौपदी प्रश्न और न्याय की मुखर चेतना का प्रतिनिधित्व करती हैं, पार्वती तप और दृढ़ संकल्प की, जबकि सीता आत्मसम्मान और नैतिक अडिगता की विशिष्ट अभिव्यक्ति प्रस्तुत करती हैं।[84]

---

[81] वाल्मीकि, श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, अयोध्याकाण्ड एवं सुन्दरकाण्ड, सीता–संबंधी प्रसंग।
[82] वही, अयोध्याकाण्ड, कौशल्या एवं सुमित्रा–संबंधी प्रसंग।
[83] वाल्मीकि, श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, किष्किन्धाकाण्ड एवं युद्धकाण्ड, तारा तथा मन्दोदरी–संबंधी प्रसंग।
[84] वेदव्यास, महाभारत, सभापर्वय कालिदास, कुमारसम्भवम्, पञ्चम सर्ग।

समीक्षात्मक दृष्टि से रामायण की नारी को आधुनिक नारीवादी अवधारणाओं का प्रत्यक्ष प्रतिनिधि घोषित करना उचित नहीं होगा, क्योंकि रामायण की सामाजिक संरचना अपने विशिष्ट ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ में निर्मित हुई थी। इसके बावजूद महाकाव्य में अनेक ऐसे प्रसंग हैं जहाँ नारी अपना मत व्यक्त करती है, निर्णय लेती है, नीति–परामर्श देती है, अनुचित आचरण से असहमति प्रकट करती है और अपने आत्मसम्मान की रक्षा करती है। यही प्रसंग रामायण की नारी–चेतना को वर्तमान विमर्श के लिए भी महत्त्वपूर्ण बनाते हैं।

इस अध्ययन का प्रमुख निष्कर्ष यह है कि रामायण की नारी केवल त्याग और सहनशीलता की प्रतिमूर्ति नहीं, बल्कि विवेक, स्वाभिमान, संकल्प, नीति–बुद्धि, मातृत्व, आध्यात्मिकता और नैतिक प्रतिरोध की भी संवाहिका है। वाल्मीकि ने स्त्री के गुणों के साथ उसकी मानवीय जटिलताओं को भी स्थान दिया है। इसीलिए उनका नारी–चित्रण आदर्श और यथार्थ के मध्य एक विशिष्ट संतुलन स्थापित करता है।

अतः कहा जा सकता है कि वाल्मीकि रामायण में नारी–चेतना भारतीय सांस्कृतिक मर्यादा के भीतर विकसित आत्मसम्मान, आत्मनिर्णय, कर्तव्य–बोध, नैतिक विवेक, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा आध्यात्मिक चेतना की समन्वित अभिव्यक्ति है। यही बहुआयामी स्वरूप रामायण की नारी को युगान्तरकारी बनाता है और वर्तमान साहित्यिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक विमर्श में भी उसकी प्रासंगिकता को बनाए रखता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

(क) मूल एवं प्राथमिक ग्रन्थ

1. वाल्मीकि, श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, गीताप्रेस, गोरखपुर।
2. वेदव्यास, महाभारत, गीताप्रेस, गोरखपुर।
3. कालिदास, कुमारसम्भवम्, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी।
4. कालिदास, रघुवंशम्, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी।
5. ऋग्वेद–संहिता, प्रामाणिक भाष्य एवं हिन्दी अनुवाद सहित संस्करण।
6. बृहदारण्यकोपनिषद्, गार्गी एवं मैत्रेयी–संवाद सहित प्रामाणिक संस्करण।
7. मनुस्मृति, सामाजिक एवं स्त्री–संबंधी अवधारणाओं के अध्ययन हेतु प्रामाणिक संस्करण।

(ख) रामायण एवं संस्कृत साहित्य संबंधी सहायक ग्रन्थ

1. उपाध्याय, बलदेव, संस्कृत साहित्य का इतिहास, शारदा निकेतन, वाराणसी।
2. गैरोला, वाचस्पति, संस्कृत साहित्य का इतिहास, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
3. बुल्के, कामिल, रामकथा : उत्पत्ति और विकास, हिन्दी परिषद्, प्रयाग।
4. कीथ, ए. बी., A History of Sanskrit Literature, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
5. विन्टरनित्ज, एम., History of Indian Literature, भारतीय महाकाव्य–साहित्य से संबंधित खण्ड।
6. उपाध्याय, बलदेव, भारतीय संस्कृति एवं संस्कृत वाङ्मय से संबंधित आलोचनात्मक अध्ययन।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

7. द्विवेदी, हजारीप्रसाद, भारतीय संस्कृति एवं साहित्य संबंधी निबन्ध।
8. दिनकर, रामधारी सिंह, संस्कृति के चार अध्याय, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज।

(ग) समीक्षात्मक अध्ययन के प्रमुख ग्रन्थ एवं प्रसंग

1. वाल्मीकि रामायण, बालकाण्ड, अहल्या–संबंधी प्रसंग।
2. वाल्मीकि रामायण, अयोध्याकाण्ड, सीता, कौशल्या, सुमित्रा एवं कैकेयी–संबंधी प्रसंग।
3. वाल्मीकि रामायण, अरण्यकाण्ड, शबरी तथा वनजीवन से संबंधित प्रसंग।
4. वाल्मीकि रामायण, किष्किन्धाकाण्ड, तारा की नीति–बुद्धि एवं राजनीतिक चेतना।
5. वाल्मीकि रामायण, सुन्दरकाण्ड, सीता का आत्मसम्मान, धैर्य और रावण के प्रति नैतिक प्रतिरोध।
6. वाल्मीकि रामायण, युद्धकाण्ड, मन्दोदरी एवं लंका के नारी–पात्रों से संबंधित प्रसंग।
7. महाभारत, सभापर्व, द्रौपदी की न्याय–चेतना एवं धर्मविषयक प्रश्न।
8. महाभारत, आदिपर्व एवं वनपर्व, कुन्ती के मातृत्व और कर्तव्य–बोध से संबंधित प्रसंग।
9. महाभारत, उद्योगपर्व एवं स्त्रीपर्व, गांधारी की नैतिक चेतना।
10. कुमारसम्भवम्, पञ्चम सर्ग, पार्वती की तपस्या, संकल्प और साधना।
11. रघुवंशम्, दाम्पत्य, मातृत्व तथा राजवंशीय नारी–जीवन से संबंधित प्रस।